प्रगति – 2

2016-2017

हिंदी

कक्षा VI

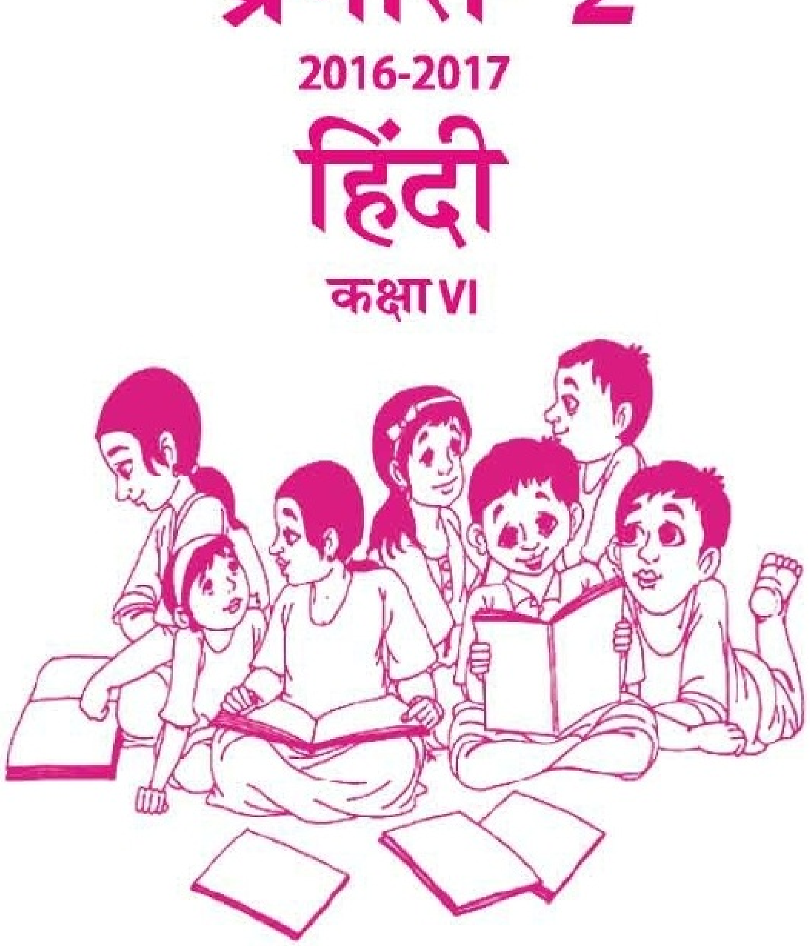

NOT FOR SALE

स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :

DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

प्रगति–2

2016-2017

हिंदी

कक्षा VI

NOT FOR SALE

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :
DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

GNCT OF DELHI
शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

पुनर्वीक्षण :

डॉ. शारदा कुमारी
सुश्री लक्ष्मी पाण्डेय
मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नई दिल्ली

परावर्द्धन एवं संपादन समूह :

- डॉ. जयशंकर शुक्ला, मैंटर शिक्षक,
  राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, राजनिवास मार्ग, दिल्ली
- श्री आलोक तिवारी, मैंटर शिक्षक
  राजकीय बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली
- श्री संजीव शर्मा, मैंटर शिक्षक
  राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशनगंज, दिल्ली
- श्री अक्षय कुमार दीक्षित,
  राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली
- श्रीमती वीना शर्मा
  राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, निलोठी, नई दिल्ली

प्रकाशन प्रभारी : सपना यादव

प्रकाशन दल : श्री नवीन कुमार, सुश्री राधा और श्री जय भगवान

भूमिका

दिल्ली सरकार ने बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि सभी अध्यापक छोटे-छोटे समूहों में बैठकर छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा के बच्चों की पुस्तकों का बारीकी से अवलोकन एवं अध्ययन करें और इन कक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में दी गई रचनाओं एवं विषयों को आधार बनाकर सीखने-सिखाने के लिए पूरक सामग्री की रचना करें। इस समूचे अभ्यास का उद्देश्य यह था कि सभी अध्यापकों को एक ऐसा साझा धरातल मिले जहाँ वे बच्चों के मौजूदा अधिगम स्तर की समझ के आधार पर अपनी कक्षाओं के बच्चों के लिए अध्ययन अध्यापन की सामग्री मिल-जुलकर तैयार कर सकें।

दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि बच्चों के लिए सरल एवं संदर्भ युक्त पठन सामग्री तैयार करने का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था। इस महती उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा शिक्षा निदेशालय के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान के लगभग 20,000 अध्यापकों के लिए मई एवं जून 2016 में कार्यशालाएँ आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं के सत्रों का संचालन सर्व शिक्षा अभियान के संकुल संसाधन समन्वयकों के सहयोग से मैंटर शिक्षकों द्वारा किया गया।

इन कार्यशालाओं में अध्यापकों ने विषयवस्तु के साथ-साथ कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त तौर-तरीकों पर भी खुलकर चर्चा की। इस प्रकार हिन्दी विषय का अध्यापन कर रहे लगभग 4000 अध्यापकों (टी.जी.टी हिन्दी) ने अपने विषय के लिए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की। इसके बाद मैंटर शिक्षकों के एक समूह ने कार्यशालाओं में तैयार इस सामग्री का संपादन किया और मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा इस संपादित सामग्री का पुनर्वीक्षण किया गया। इस समूची प्रक्रिया में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु को आधार बनाते हुए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की गई।

इस प्रक्रिया एवं सामग्री को 'कार्य में प्रगति' के रूप में देखा जाना चाहिए। यह सामग्री निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का विकल्प नहीं है, बल्कि यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आधार देने और उसका संवर्द्धन करने के लिए अतिरिक्त सामग्री है। हम अध्यापकों एवं अध्यापक शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि बच्चों के साथ इस सामग्री के निर्वाह एवं अन्त:क्रिया से उपजे अनुभवों को हमारे साथ साझा करें, साथ ही इस प्रकार के प्रयासों में सुधार एवं संवर्द्धन के लिए अपने सुझाव भी हमें दें। आप अपने सुझाव एवं फीडबैक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के होमपेज पर उपलब्ध फीडबैक प्रपत्र के ज़रिए ऑन लाइन भी भेज सकते हैं।

संवाद........अपने अध्यापक साथियों से

साथियों, आप सभी जानते हैं कि बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात् कर पूर्ण भाषिक क्षमता के साथ विद्यालय की देहरी के भीतर प्रवेश करते हैं। जो बच्चे बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं। आपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की इस सहजात भाषिक क्षमता का पूरा ध्यान रखते हुए और परिवार तथा आस-पास के लोगों के साथ अंत: क्रिया से उपजे अनुभवों का समुचित उपयोग करते हुए उन्हें पढ़ने और लिखने की रोमांचक दुनिया में प्रवेश करवाया हैं। आप इस बात की भरपूर समझ रखते हैं कि आप के पास आने वाले बच्चे भिन्न-भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक आर्थिक पृष्ठभूमि के हैं, उनके पास दुनिया को अपनी ही तरह से देखने के अपने तरीके हैं। वे बड़े सहज भाव से अपनी बात, अपने अनुभव, भावनाएँ, इच्छाएँ व्यक्त कर देते हैं।

आपने पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देते समय इस सहजता को ध्यान में रखा है। अब आपका समूचा ध्यान इस बात पर है कि आपके विद्यार्थी जिस सहजता के साथ पढ़ने लिखने की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं, उसी सहजता के साथ वे इन भाषायी कौशलों में निपुणता भी हासिल करें। इस महती कार्य में आपका साथ देने के लिए प्रगति-2 आपके पास है जिसका अन्तत: उद्देश्य है बच्चों को उत्साही पाठक बनने के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें परिवेशीय सजगता का भाव बनाए रखना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कक्षा छह, सात एवं आठ के लिए तैयार हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों 'वसंत' की रचनाओं को आधार बनाते हुए 'प्रगति' विद्यार्थियों के लिए भाषायी गतिविधियों का एक विस्तृत फ़लक प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी रचनाओं का रसास्वादन अपनी मूल पुस्तक 'वसंत' से करेंगे और उन रचनाओं के पठन से उपजी अनुभूतियों को अपने अनुभवों से जोड़ने व कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के लिए 'प्रगति' की गतिविधियों का आनन्द उठाएँगे। सरस और सरल गतिविधियों का यह व्यापक संसार विविधता का एक सुंदर ताना-बाना प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को न केवल भाषायी कौशलों में निपुणता प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि उन्हें बुनियादी मूल्य संरचना और भविष्य के प्रति दृष्टि निर्माण की राह पहचानने में भी योगदान देगा।

यह 'वसंत' की रचनाओं का प्रवेश द्वार है साथ ही भाषायी कौशलों में समृद्धता प्राप्त करने का सरस रास्ता भी।

'प्रगति' के साथ अन्त:क्रिया करते समय अगर किसी पल विशेष में आपको ऐसा लगे कि अभ्यास कार्य की बहुलता है तो घबराएँ नहीं, अभ्यास कार्य की अनिवार्यता अर्जित किए गए कौशलों के संवर्द्धन के लिए है न कि उन्हें निरूत्साहित करने के लिए। यहाँ पर समय प्रबंधन से जुड़े आपके कौशल बहुत महत्वपूर्ण हैं। किसी रचना संदर्भ के विशेष में आपको यह महसूस होगा कि उसके लिए दी गई गतिविधियाँ रचना के पठन कौशल का आकलन नहीं कर रही तो ऐसा इसलिए किया गया है कि आप उस पाठ विशेष को पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों से ही प्रश्न बनवाएँ। प्रश्नों की प्रकृति ऐसी हो जो कल्पनाशीलता, अनुमान लगाने की क्षमता, वर्गीकरण, विश्लेषण, विवरण आदि प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करते हो। यदि विद्यार्थी ऐसे प्रश्न बना पाते हैं तो समझिए कि वे पाठ के मर्म को पूरी तरह से समझ रहे हैं। बच्चों के प्रति आपके सरोकार एवं आपकी रचनात्मकता इस सामग्री का भरपूर लाभ उठाएगी। आपके सुझावों की भी अपेक्षा सदैव रहेगी।

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	वर्ग	पृष्ठ संख्या
1.	बारह खड़ी का जादू	भाषा खेल	1
2.	शब्दों की बात	भाषा खेल	5
3.	अक्षरों का महत्व	निबंध	9
4.	साथी हाथ बढ़ाना	गीता	17
5.	पार नजर के	विज्ञान परख लेख	18
6.	ऐसे ऐसे	एकांकी	24
7.	टिकट एलबम	कहानी	29
8.	झाँसी की रानी	कविता	34
9.	जो देखकर भी नहीं देखते	अनुभव	38
10.	संसार पुस्तक है	पात्र	44
11.	मै सबसे छोटी होऊँ	कविता	48
12.	नौकर	कहानी	52
13.	साँस साँस में बाँस	निबंध	57
14.	मत बाँटो इंसानों को	कविता	61

बारह खड़ी का जादू

आपको अपने छुटपन का वह दौर याद होगा जब आप भाषा से तरह-तरह के खेल खेलते थे। तब मुँह जुबानी खेलते थे, अब बारह खड़ी और कलम के साथ खेलेंगें। तो आओ बनाएँ कुछ सार्थक शब्द।

ज	जा	जि	जी	जू	जु	जे	जै	जो	जौ
त	ता	ति	ती	तू	तु	ते	तै	तो	तौ
न	ना	नि	नी	नू	नु	ने	नै	नो	नौ
प	पा	पि	पी	पू	पु	पे	पै	पो	पौ

जूता ______ पानी ______ ______

______ ______ ______

______ ______ ______

______ ______ ______

______ ______ ______

क	का	कि	की	कू	कु	के	कै	को	कौ
च	चा	चि	ची	चू	चु	चे	चै	चो	चौ
ल	ला	लि	ली	लू	लु	ले	लै	लो	लौ
म	मा	मि	मी	मू	मु	मे	मै	मो	मौ

कचालू लौकी

म	मा	मि	मी	मू	मु	मे	मै	मो	मौ
ग	गा	गि	गी	गू	गु	गे	गै	गो	गौ
न	ना	नि	नी	नू	नु	ने	नै	नो	नौ
स	सा	सि	सी	सू	सु	से	सै	सो	सौ

क	का	कि	की	कू	कु	के	कै	को	कौ
ल	ला	लि	ली	लू	लु	ले	लै	लो	लौ
ग	गा	गि	गी	गू	गु	गे	गै	गो	गौ
म	मा	मि	मी	मू	मु	मे	मै	मो	मौ

क ________________ - ______________________________

ख ________________ - ______________________________

ग ________________ - ______________________________

घ ________________ - ______________________________

ड़ ________________ - ______________________________

शब्दों की बात

ठ, ड, ढ वर्ण वाले तीन-तीन शब्द लिखो।

ठ

आठ

ड

डलिया

ढ

ढपली

ड़, ढ़ या ढ का प्रयोग करते हुए इन चित्रों के नाम लिखिए-

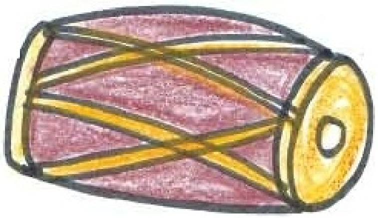

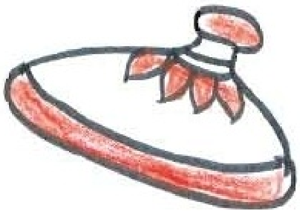

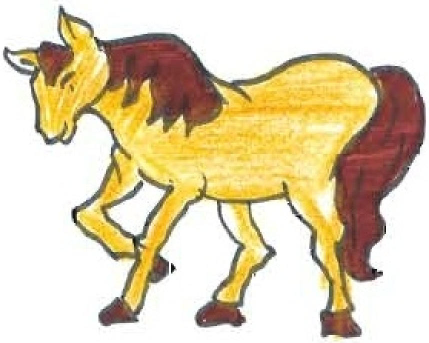

सही मात्रा लगाकर चित्र के नाम पूरे कीजिए-

गलाब

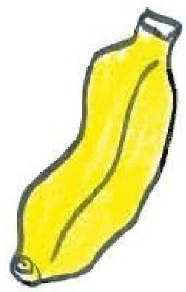

कला

कताब

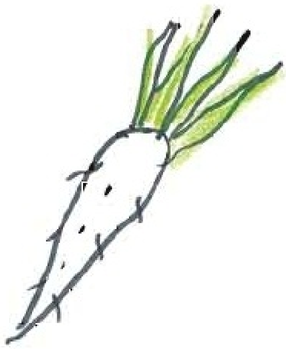

मली

अनुस्वार या अनुनासिक (ं या ँ) लगाकर शब्द पूरे करो।

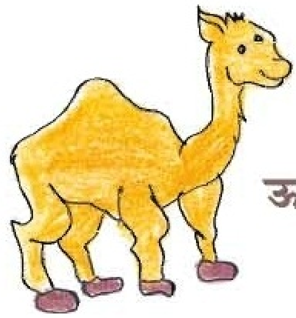
ऊट

चाद

मूछ

पतग

घटी

बदर

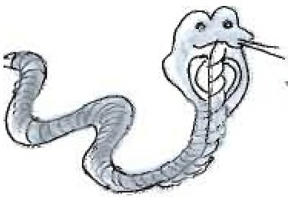
साप

भिडी

पाठ
1

अक्षरों का महत्व

पाठ प्रवेश :-

बच्चों ! आपके पास भाषा नाम की एक बहुत ही रोमांचकारी मज़ेदार चीज है। इसका सहारा लेकर आप अपने मन की बातें और ज़रूरतें किसी दूसरे को बता पाते हैं। आपके पास भाषा का लिखित स्वरूप है और उसका मौखिक स्वरूप यानी कि जब आप बोल कर अपनी बात कहते हैं तो यह मौखिक और जब अपनी इच्छा, अपना गुस्सा, अपना विचार लिख कर बताते हैं तो यह है भाषा का लिखित स्वरूप। मैं अपनी बात आप तक भाषा के इस लिखित स्वरूप द्वारा ही तो पहूँचा रही हूँ। आप तरह-तरह की कहानियाँ किस्से, जानकारियाँ पढ़ते हैं तो कैसे ? भाषा के लिखित स्वरूप द्वारा ही यह संभव हो पाता है।

भाषा की लिखित दुनिया में प्रवेश करने के लिए आपको चाहिए एक लिपि जो अक्षरों पर आधारित है। बिना अक्षर के भला आप बोल-सुन-पढ़-लिख पाते क्या ?

तो साथियों प्रस्तुत पाठ 'अक्षरों का महत्व' आपको अक्षरों की मज़ेदार दास्तान बताने जा रहा है।

इस पाठ के रचनाकार श्री गुणाकर मुले जी है। तुम्हें यह जानकर बड़ा मज़ा आएगा कि गुणाकर मुले जी मूलतः गणितज्ञ है। है न रोचक बात। एक गणितज्ञ की लेखनी से निकले झिलमिलाते अक्षर आपके सामने है। इस पाठ के ज़रिए आप समझ बनाएगें कि अक्षरों की खोज कैसे हुई, कब हुई, किसने की। रचनाकार आपको भाषा के जन्म से लेकर उसके लिखित/मुद्रित रूप तक आने के सफ़र पर ले जा रहा है। एक समय था जब चित्र, संकेत भाषा का माध्यम थे फिर ध्वनि और फिर अक्षर आए।

तो बच्चों, आओ चलते हैं अक्षरों के इतिहास जानने के सफ़र पर।

इस सफ़र से वापिस आकर यह भी बताना कि एक गणितज्ञ की लेखनी से लिखी यह रचना आपको कैसी लगी ?

1. नीचे डिब्बे में बहुत से विशेषण है आपको जो भी विशेषण हाथी के लिए उपयुक्त लग रहे हैं उन्हें नीचे लिखों:-

हाथी

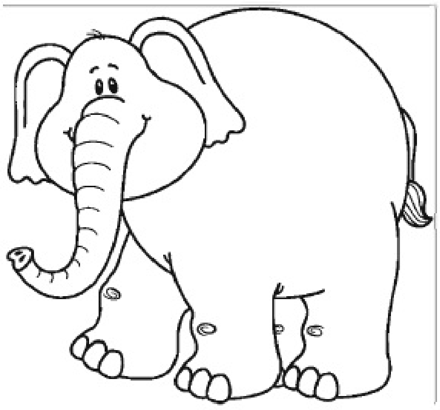

....

हरा छोटा भोला भोली रंग-बिरंगा मनमोहक आलसी
खूँखार डरावना कंजूस सुंदर लालची पेटू वफ़ादार

2. बताइये कि कौन-कौन से शब्द कलश के भीतर दिए गए अक्षरों और मात्राओं से बन सकते हैं? उन पर गोला बनाओं।

3. चित्र देखकर उसके नाम में सही स्थान पर बिंदु या चंद्रबिंदु लगाईए –

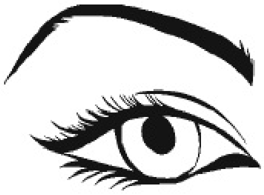

आख

गजा

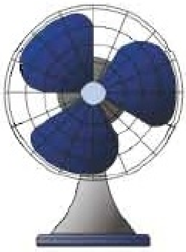

पखा

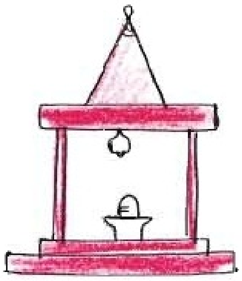

मदिर

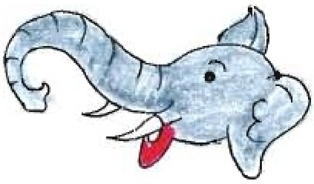

सूड

अडा

4. आओं पाठ को खोलें ....

- 'अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई।'

  क्या आपको भी ऐसा ही लगता है कि अक्षरों की खोज के साथ दुनिया में बहुत बदलाव आए।

  किस तरह से बदली यह दुनिया, उदाहरण देकर बताएँ।

- पाठ में गणित की इकाइयों से जुड़े कुछ शब्द आएँ हैं जैसे :-

  ➢ तीन अरब ....

  ➢ एक करोड़ ....

  ➢ पाँच लाख ....

  ➢ छह हज़ार ....

  इन इकाइयों को अंकों में लिखें। आप अपने गणित विषय के अध्यापक की मदद ले सकते हैं।

5. आप अपनी बातों को बोलकर कहते हैं। बोलने के लिए आप ध्वनि यानी कि स्वर और व्यंजन का सहारा लेते हैं।

आपके विद्यालय या घर के आस-पास ऐसे बच्चे हो सकते हैं जो बोलकर अपनी बात नहीं कह पाते, वे विचारों-इच्छाओं का आदान-प्रदान किस तरह करते हैं, मालूम करें और कक्षा में बताएँ।

'यदि अक्षरों की खोज न हुई होती तो ....''

इस विषय पर कुछ मज़ेदार बातें आपके मानस में उथल-पुथल मचा रहीं होगी, तो देर किस बात की? उठाइए अपनी लेखनी और लिख दीजिए अपने अनोखे विचार।

....

....

....

....

....

....

....

6. हम जो भी बोलते हैं, वह 'भाषा' है। भाषा को लिखित रूप से दर्शाने के लिए चाहिए 'लिपि'। नीचे मटके में कुछ लिपियाँ आपसे कुछ कहना चाह रही हैं। क्या आप पहचानेगें कि कौन-कौन सी भाषाएँ हैं ये :-

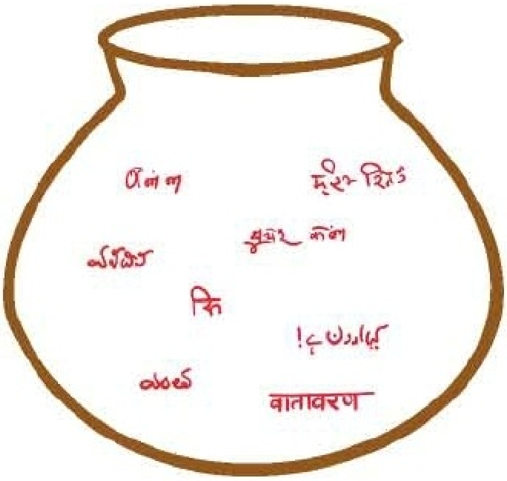

7. 'आ', 'आ' या 'ए', 'बी' ये अक्षर हैं जिनसे मिलकर शब्द बनते हैं। शब्द बहुत कुछ कहते हैं। नीचे दिए गए चित्र भी तो कुछ कह रहे हैं, ज़रा बताएँ तो ....

8. नीचे लिखे शब्दों के अक्षर उलट पुलट गए हैं। सही स्थान पर रखकर शब्द बनाओ।

य हा स ता

आ न स मा

ल कु व्या

श्य व आ ता क

की चौ र दा

ख दे ल भा

9. दो घड़ों में इक रंग पानी

नीचे दो बर्तन हैं। एक बर्तन में मात्राओं के बिना अक्षर हैं। दूसरे बर्तन में मात्राओं के साथ हैं। ऐसा करते हैं, एक से लेते हैं अक्षर और दूसरे से लेते हैं मात्रा और फिर बनाते हैं कुछ शब्द। तो आओ शुरू करते हैं:-

जैसे :-

गिनी,	पूजा	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

10. इन चित्रों में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग हो रहा है?

____

सुनना

____

पाठ 2

साथी हाथ बढ़ाना

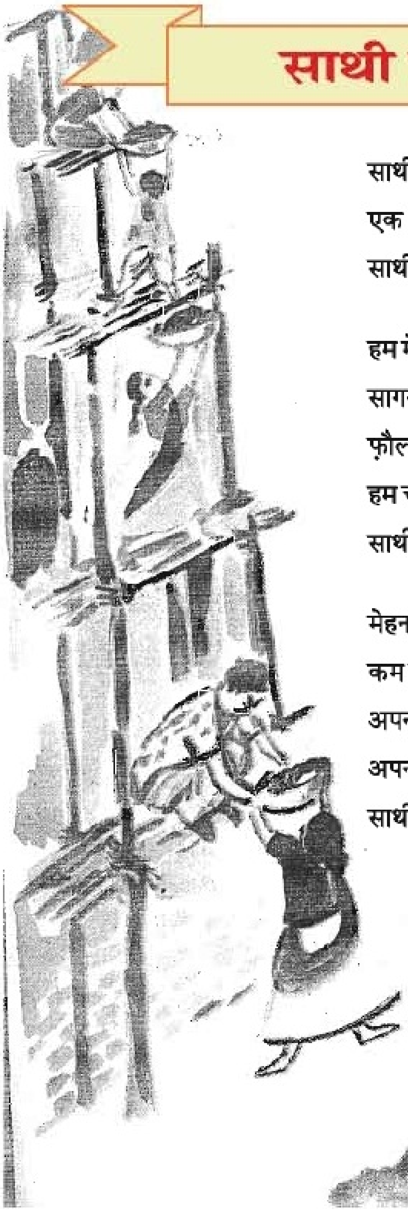

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम कढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना।

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कम गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना।

पाठ 3

पार नज़र के .....

पाठ प्रवेश :-

बच्चों ! कुछ समय पहले रितिक रोशन की एक फिल्म आई थी 'कोई मिल गया'। आपने पता नहीं देखी या नहीं देखी ? जानते हैं, यह जिक्र यहाँ पर क्यों किया ? आप समझ गए होंगे कि प्रस्तुत पाठ की प्रकृति इस फिल्म के मूल स्वभाव से मेल खाती है। 'कोई मिल गया' एक फँटेसी थी यानी कि काल्पनिक घटना पर आधारित फिल्म और प्रस्तुत पाठ 'पर नज़र के' भी एक फंतासी है। यह पाठ आपको एक दूसरे ग्रह की रहस्यमयी दुनिया में ले जाएगा जहाँ जीवन की धुरी तरह-तरह के यंत्रों के इर्द-गिर्द घूमती है। आपकी ही उम्र का छोटू यानी कि इस कहानी का नायक रचनाकार द्‌वारा रचे गए काल्पनिक ग्रह का जम कर मज़ा लेता है। मुझे लगता है छोटू के साथ-साथ आप भी उस अनोखी दुनिया का आनन्द उठाएगें।

अरे भाई ! रुकिए। आप तो छोटू के साथ जाने के लिए एकदम उतावले हो उठे। साथियों ! यह तो जान लीजिए कि कल्पनाओं की दुनिया में सैर कराने वाला पाठ लिखा किसने है ?

यह फंतासी की दुनिया महान वैज्ञानिक श्री जयंत विष्णु नार्लोकर ने रची है। मूलतः यह रचना मराठी में लिखी गई थी। हिन्दी भाषी बच्चे यानी कि आप भी इस रोमांच पैदा करने वाली रचना का आनन्द उठा सके तो सुश्री रेखा देशपाँडे जी ने इसका हिन्दी में अनुवाद किया।

इस रचना के माध्यम से आप दो बातों का मज़ा ले रहे हैं,

एक तो तिलस्मी दुनिया के मज़े लेंगे,

दूसरे वैज्ञानिक की लेखनी से लिखी मराठी रचना हिन्दी की दुनिया में जब अनुवाद के बाद पाँव पसारती है तो कैसी दिखती है।

मैं आपको और नहीं रोकती। चलिए छोटू के साथ अपनी धरती से अलग किसी दूसरे ग्रह की दुनिया में। आकर ज़रूर बताइए कि आपने वहाँ किस तरह के मज़े किए।

शब्दों के खेल

1. नीचे चौकोर खानों में लिखे वर्णों से अधिक से अधिक शब्द बनाओ। उदाहरण देखो।

| प | क | ड़ | क | र |

पक पकड़ कड़क कर पर

| आ | म | ला | ई | ख | र | बू | जा | मु | न |

....

| का | ली | ची | ता | रे | श | म |

....

| रा | खी | र | स | मो | सा | ह | स | जा |

....

2. चित्रों की सहायता से मुहावरे पूरे करके लिखिए-

दिखाना

....

खट्टे करना

....

का

....

खुलना

....

शब्द - सीढ़ी

3. चित्रों की सहायता से शब्द सीढ़ी पूरी करो।

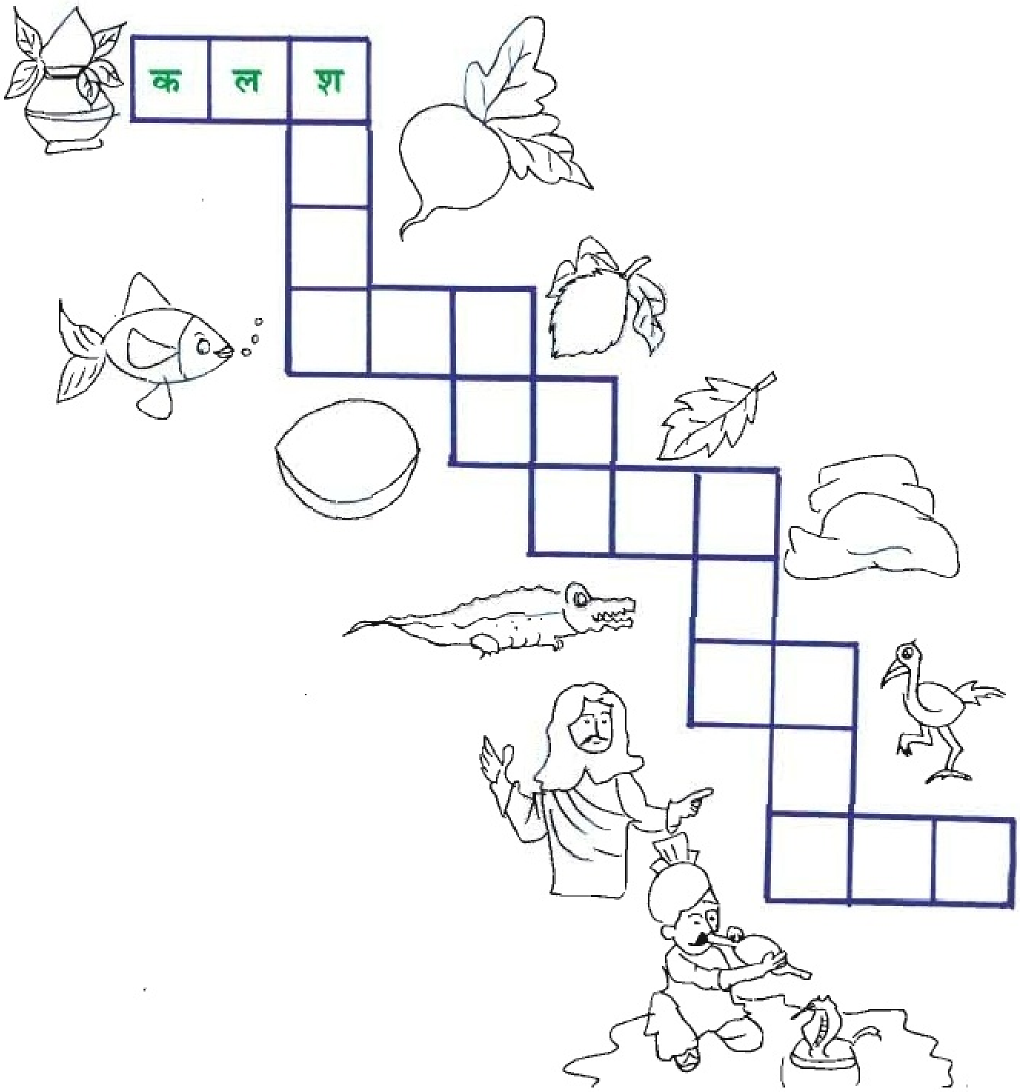

4. चित्र पहचानकर उसके नाम से सही स्थान पर अनुस्वार ं या ँ लगाइए –

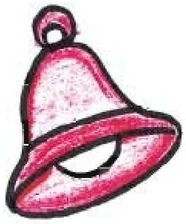
घटा

मूछ

पख

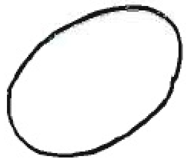
अडा

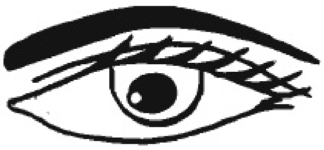
आख

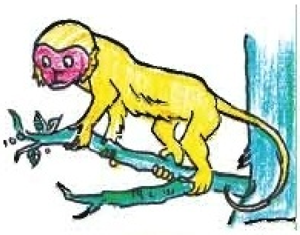
लगूर

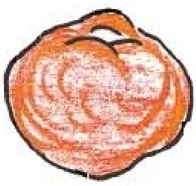
सतरा

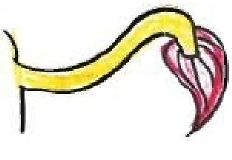
पूछ

वर्ग - पहेली

5. निम्नलिखित वर्ग-पहेली में से विशेषण शब्द चुनकर लिखिए-

मी	सु	हा	ना	प
ठा	द	क	व	ह
ग	र	म	थो	ला
पाँ	व	धु	ड़ा	ल
च	तु	र	नी	ची

....

....

....

....

....

6. शब्द बनाइए –

	बा	
पा	ल	क
	क	

	प	
ब		न

	क	
		ड़ी
	ड़ी	

	गि	
	र	ती

	उ	
	न	का

	श	
ल		र
	र	

ऐसे - ऐसे

प्रस्तुत एकांकी ऐसे-ऐसे, हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखी गई है जिन्होंने अनेक लघु-कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा संस्मरण लिखे हैं। उनके लेखन में देश प्रेम, राष्ट्रवाद तथा सामाजिक विकास दिखाई देता है। इन्हें पद्मभूषण, ज्ञानपीठ तथा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

अधिकांश बच्चे विद्यालय न जाने के बहुत से बहाने बनाते हैं। बच्चों ! आप ने भी कभी-न कभी कुछ बहाने बनाए होंगे। इस एकांकी में जो बच्चा मोहन है उसने विद्यालय का काम नहीं किया इसलिए वह तरह-तरह के बहाने बनाता है चलो देखते है वह किस प्रकार का बहाना बनाता है।

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने बहुत रोचक ढंग से एक बच्चे की मनःस्थिति को दर्शाया है। 'ऐसे-ऐसे' एकांकी (जिसे हम छोटा नाटक कह सकते है।) में मोहन नाम का एक लड़का जिसकी उम्र आठ-नौ वर्ष की है जो तीसरी क्लास में पढ़ता है। इस समय वह बड़ा बेचैन लग रहा है। बार-बार पेट को पकड़ता है और कहता है कि बहुत जोर से ऐसा-ऐसा हो रहा है। माँ, पिताजी से डॉक्टर को बुलाने के लिए कहती हैं। माँ मोहन के पेट को गर्म पानी से सेकती हैं। मोहन के पिताजी से पूछती हैं कि कहीं इसने अंट-शंट तो नहीं खा लिया। पिताजी कहते हैं नहीं, नहीं केवल एक केला और संतरा खाया था। दफ़्तर तक चलने तक कूदता फिर रहा था। बस अड्डे पर आकर अचानक से बोला-पिताजी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ पिताजी बहुत परेशान थे बार-बार पिताजी पूछ रहे थे कहीं चाकू-सा तो चुभ नहीं रहा ? गोला-सा फूटता है क्या ? परन्तु ऐसे मोहन ने तो एक ही रट लगा रखी थी- कुछ ऐसे-ऐसे होता है। इसके साथ बार-बार ज़ोर से कराह रहा था। माँ हींग, चूरन, पिपरमैंट सब दे चुकी थी, अब वैद्य जी का इंतजार कर रही थी। पिता जी डॉक्टर को बुलाते हैं। इतने में एक पड़ोसी दीनानाथ घर में आकर मोहन के हाल पूछते हैं और बताते हैं कि मैं वैद्य जी को कह आया हूँ। मोहन तो अभी भी रुँआसा सा कराह रहा था। कुछ ही समय बाद वैद्य जी आ जाते हैं और मोहन की जाँच करते हैं और कहते हैं वात का प्रकोप है। पेट साफ नहीं हुआ और हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं। और कहते है कि ऐसे-ऐसे होता है ? मोहन कहता है हाँ। वैद्य जी बीमारी समझ गए और कहा अभी पुड़िया भिजवा देता हूँ। पिता जी वैद्य जी को घर के द्वार तक छोड़ते हुए जाते हैं और पाँच का नोट भेंट स्वरूप दे देते हैं। वैद्य जी के जाने के बाद डॉक्टर साहब आ जाते हैं। वह भी जाँच करते हैं। डॉक्टर कहता है कि कब्ज ही लगता है दवा भेजता हूँ। डॉक्टर को जाते समय पिता जी दस का नोट देते है। उतने में एक पड़ोसिन भी मोहन का

हाल पूछने आ जाती है। मोहन अभी भी पेट दबाते हुए कहता है 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है। थोड़ी देर के बाद मोहन के मास्टर जी घर में आ जाते हैं और कहते है मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है। इसकी ऐसे-ऐसे की बीमारी को मैं जानता हूँ।

उन्होंने मोहन को कहा - डरो मत बेशक कल स्कूल मत आना। उन्होंने मोहन से पूछा कि स्कूल का काम हो गया है, मोहन चुप रहा, माँ और मास्टर जी के दुबारा पूछने पर मोहन कहता है कि सब काम नहीं हुआ। मास्टर जी समझ गए कि 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है। तब मास्टर जी ने माँ को बताया कि मोहन ने महीने भर मौज मस्ती की। स्कूल का काम नहीं किया बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा। 'ऐसे-ऐसे' की दवा मास्टर जी ने यह बताई कि आप को स्कूल से दो दिन की छुट्टी मिलेगी जिसमें आप काम पूरा करोगे और इससे आपका ऐसे-ऐसे दूर भाग जाएगा। उतने में दीनानाथ जी और पिताजी दवा लेकर आते हैं। तब माँ मास्टर जी वाली पूरी बात बताती है। पिताजी सुनकर चकित रह जाते हैं और उनके हाथ से दवा की शीशी छूटकर गिर पड़ती है। एक क्षण मोहन को ठगे से देखते हैं और फिर हँसने लगते हैं।

1. चित्रों में संज्ञा शब्द ढूंढते हुए वाक्यों को पूरा करोः-

क) .... सारा दूध पी गई।

ख) कल हम .... देखने गए थे।

ग) आकाश में .... छा रहे हैं।

घ) मीना को .... बहुत पसंद है।

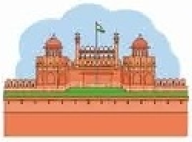

ड.) .... हमें छाया देते हैं।

च) चाचाजी ने मोहन को एक .... दी।

2. चित्र देखकर क्रिया शब्द भरिए –

क) माता जी सब्ज़ी .... ।

ख) महिमा सुंदर रंगोली .... ।

ग) डाकिया चिट्ठी .... ।

घ) बच्चे पटाखे .... ।

3. नीचे लिखे वर्णों और मात्राओं की सहायता से छह-छह शब्द बनाकर लिखिए –

क) र क म ा ो

मोर ______ ______
______ ______
______ ______

ख) ल ज द ा ि

दिल ______ ______
______ ______
______ ______

4. वर्ग पहेली में से संज्ञा शब्द चुनकर लिखिए –

आ	द	मी	स	ऊँ
म	ता	हा	चि	चा
ब	च	प	न	ई
च्चा	ना	पी	गं	गा
ता	कि	ता	ब	ता

किताब

5. बॉक्स में से शब्द निकालकर स्त्रीलिंग या पुल्लिंग के थैलों में डालो।

स्त्रीलिंग

मोर माली चिड़िया

गधा दुल्हन

बालिका चाचा गाय

गुड्डा बैल बुढ़िया

पुत्र चुहिया शेर

रानी राजकुमार हथिनी

पुल्लिंग

पाठ 5

टिकट अलबम

दोस्तो, आपकी सबसे प्रिय वस्तु क्या है ? कोई खिलौना ? कोई ऐसी चीज जिसे आपने बहुत कोशिशों के बाद प्राप्त किया है ? कोई ऐसी वस्तु जो आपने बहुत मेहनत से स्वयं बनाई है ? कोई ऐसी वस्तु जो आसानी से नहीं मिलती ? कोई ऐसी वस्तु जो आपके किसी प्रिय व्यक्ति ने आपको दी है ? या कोई ऐसी वस्तु जिसपर ये सभी बातें लागू होती है ? उस वस्तु का नाम यहाँ लिखिए ....

आप अपनी प्रिय वस्तु को बहुत सहेजकर रखते होंगे। उसकी देखभाल प्यार और सावधानी से करते होंगे। पूरी कोशिश करते होंगे कि वह सुरक्षित रहे। साथ ही आपको उस वस्तु पर गर्व भी अवश्य होगा। आप उसे उत्साह के साथ अपने दोस्तों को दिखाते होंगे और वे भी आश्चर्य से भरकर उसकी प्रशंसा करते होंगे। और एक दिन कुछ ऐसा हो कि वे उसकी प्रशंसा करनी बंद कर दें, तो आपको कैसा लगेगा ?

आज जो कहानी आप पढ़ेंगे, उसमें भी आपकी ही आयु के एक लड़के के साथ ऐसा ही होता है। उसने बहुत मेहनत से विभिन्न देशों की डाक-टिकटों को इकट्ठा करके एक एलबम बनाया है। उसका एलबम पूरे स्कूल में प्रसिद्ध है। लेकिन फिर एक दिन ऐसा कुछ होता है कि सब उसकी एलबम पर ध्यान देना बंद कर देते हैं। फिर वह लड़का क्या करता है, आपको यह कहानी पढ़कर ही पता चलेगा।

यह कहानी मूल रूप से तमिल भाषा में लिखी गई थी। इसे हिंदी में अनुवाद करके आपके सामने प्रस्तुत किया गया है। लेकिन कहानी को पढ़ते हुए ऐसा कतई नहीं लगता कि हम किसी अन्य भाषा से अनूदित कहानी पढ़ रहे हैं। इससे पता चलता है कि इस कहानी को कितनी अच्छी तरह तमिल से हिंदी भाषा में बदला गया है। एक भाषा से दूसरी भाषा में किसी लिखी हुई रचना को बदलना एक बहुत महत्वपूर्ण और जरूरी कला है।

यह कहानी पढ़ते हुए ऐसा भी लगता है कि यह तो हमारे जीवन की ही कहानी है, जैसे किसी ने हमारे या हमारे किसी दोस्त के बारे में ही कहानी बनाकर लिख दिया है। इससे पता चलता है कि कहानी लिखने के लिए एक बहुत बड़ा गुण है अपने आसपास के लोगों और उनके व्यवहार को बारीकी से देखना। अगर हम ऐसा कर सकते हैं तो हम भी ऐसी ही सुंदर कहानी लिख सकते हैं।

पाठ की बात :-

अगर नागराजन को पता चल जाता कि राजप्पा ने ही उसका टिकट-अलबम चुराया है, फिर क्या होता?

____

____

____

____

1. कहानी पढ़ो, फिर भरो

क) .... सब-के-सब नागराजन को घेरे रहते।

ख) .... की तरह उसने एक-एक करके टिकट जमा किए थे।

ग) लड़के जैसे .... गाने लगे।

घ) फिर जल्दी से .... खोली।

ड.) नागराजन ने उसे .... लौटा दी और .... गया।

2. कोई ऐसी घटना बताएँ जब आपने कोई अच्छा काम किया लेकिन आपका उतना सम्मान नहीं हुआ, जितना आपको उम्मीद थी ?

3. राजप्पा ने नागराजन का टिकट अलबम क्यों जलाया ?

4. आप राजप्पा की जगह होते तो नागराजन के टिकट अलबम से भी ज्यादा प्रसिद्ध होने के लिए क्या करते ?

6. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य पूरे किजिए -

- सच की हमेशा <u>जीत</u> होती है और झूठ की .... ।
- दिनेश कोई <u>पराया</u> नहीं, ... है।
- हरेक आदमी में <u>गुण</u> .... दोनों होते हैं।
- व्यापार में कभी <u>लाभ</u> होता है कभी .... ।
- अध्यापिका के <u>प्रश्न</u> का ....कोई न दे सका।
- दो लोग मेरे .... खड़े हो जाओ, और दो <u>पीछे</u>।
- मुकेश कल <u>देर</u> से आया था, आज ....आ गया है।
- <u>सुख</u> या ....तो जीवन में लगे ही रहते हैं।

7. सर्वनाम और विशेषण शब्द चुनकर अलग-अलग लिखिए -

सर्वनाम	विशेषण
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

पाठ 6

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नयी जवानी थी,

बच्चों, आप ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर यह पंक्तियाँ अवश्य सुनी होगी। मेरा विश्वास है कि आपने सुनने के साथ-साथ इन पंक्तियों को गाया भी होगा और गुनगुनाया भी होगा। पर, क्या आप यह जानते हैं कि इस कविता में किस की चर्चा हो रही है।

चलिए.... मैं आप को इस कविता की वीरांगना के बारे में बताती हूँ।

यह वीरांगना झाँसी राज्य की रानी लक्ष्मीबाई थी। वह 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना थी। उन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ब्रिटिश साम्राज्य की सेना में संग्राम किया और युद्ध भूमि में वीरगति प्राप्त की, परन्तु अपने जीते जी अंग्रेजों को झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया।

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी में हुआ। उनका बचपन का नाम मनिकर्णिका था। पर प्यार से उन्हें मनु कहा जाता था। मनु जब चार वर्ष की थी तब उनकी माता की मृत्यु हो गई। मनु की देखभाल करने के लिए उनके पिता जी उन्हें बाजीराव के दरबार में ले आए। वहाँ उन्होंने बचपन में ही शास्त्रों की शिक्षा भी ली। उनका विवाह सन् 1842 में झाँसी के मराठा शासित राजा गंगाधर राव निम्बालकर के साथ हुआ और वे झाँसी की रानी बनीं। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। कुछ सालों बाद रानी को पुत्र की प्राप्ति हुई पर चार महीने की आयु में ही उसकी मृत्यु हो गई इस घटना के बाद ही राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य खराब रहने लगा। उन्हें दत्तकपुत्र लेने के लिए सलाह दी गई। पुत्र गोद लेने के बाद, राजा की भी मृत्यु हो गई। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर था। ब्रिटिश सरकार से दामोदर को राज्य का उत्तराधिकारी नहीं माना। परन्तु रानी लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नहीं हारी और उन्होंने हर हाल में झाँसी की रक्षा करने का प्रण लिया, और अंत तक ब्रिटिश राज से लड़ती रहीं।

रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को अपने शब्दों में संजाने वाली सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान है। उनके दो कविता संग्रह और तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए पर उनकी प्रसिद्धि 'झाँसी की रानी' कविता के कारण मिली।

तो चलो, अब आप रानी लक्ष्मीबाई की कविता का आनन्द लिजिए। आप स्वयं इस कविता को गायेंगे तो आप में भी वीरता का भाव उत्पन्न होने लगेगा। आप को लगेगा की आप भी एक युद्ध भूमि में तलवार हाथ में लिए अंग्रजों से युद्ध कर रहे हो।

आओ कुछ कहें फिर लिखें।

1. आपके बचपन के खेल और रानी लक्ष्मीबाई के बचपन के खेल में क्या-क्या अंतर हैं?

2. इस कविता में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को लक्ष्मी-दुर्गा कहा गया है। आप उन्हें और किन नामों (विशेषणें) से बुलाना चाहेंगे?

3. आपके अनुसार गुलामी और आज़ादी का क्या मतलब है?

4. भारत को स्वतंत्र कराने के लिए लाखों लोगों ने अपनी जान कुर्बान कर दी। लेकिन उनका नाम हम और आप नहीं जानते। उन अज्ञात अमर बलिदानियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन अमर शहीदों को एक पत्र लिखो।

5. समान तुक वाले तीन-तीन शब्द लिखो।

(क) माली –

(ख) कान –

(ग) सोता –

(घ) कोने –

(ङ) रानी –

(च) लड़ी –

(ज) पानी –

(झ) कहानी –

(ञ) पुरानी –

(ट) दूर –

6. आपने भारत का मानचित्र अवश्य देखा होगा। भारत का मानचित्र बनाएँ और उसमें कविता में आए स्थानों को चिह्नित करें।

पाठ 7

जो देखकर भी नहीं देखते

हम कितनी आसानी से चीजों को देख सकते हैं, सुन सकते हैं, बोल सकते हैं, चल सकते हैं। पर इन सब बातों की तरफ हमारा ध्यान नहीं गया होगा। जो अपनी आँखों से नहीं देख सकते, कानों से नहीं सुन सकते, बोल नहीं सकते या चल नहीं सकते। कभी सोचा है उन्हें काम करने में कठिनाई तो अवश्य होती होगी। आप ने भी अपने आस-पास ऐसे व्यक्ति या किसी बच्चे को देखा होगा।

आप को तो अब तक पता चल गया होगा कि यह जिक्र यहाँ पर क्यों किया जा रहा है, क्योंकि प्रस्तुत पाठ 'जो देखकर भी नहीं देख सकते' एक ऐसी लड़की पर आधारित पाठ है जो देख नहीं सकती। परन्तु वह देखने वाले लोगों से ज्यादा देख भी सकती है। पर आप को अभी मेरी बातों पर विश्वास नहीं आ रहा होगा। पर ये बात सही है। जब आप इस पाठ की नायिका को जानेंगे और उसके बारे में पढ़ेंगे तो आप को स्वयं पता चल जाएगा कि मैं सही कह रही थी।

अरे..............अरे! रुकिये पाठ पढ़ने के लिए इतना उतावलापन मत दिखाओ। यह भी तो जान लो कि यह पाठ लिखने वाली लेखिका कौन है?

इस पाठ की लेखिका व नायिका दोनों एक ही हैं। उनका नाम 'हेलन केलर' है। यह अमेरिका की हैं। वह डेढ़ साल की थीं, बचपन की एक गंभीर बीमारी की वजह से उनकी देखने और सुनने की शक्ति जाती रही। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। वह न तो देख सकती थीं और न ही सुन सकती थीं। पर फिर भी उन्होंने दुनियाभर में घूम-घूमकर अपने जैसे लोगों के अधिकारों और विश्व शान्ति के लिए काम किया।

जब आप इस पाठ की नायिका को जानेंगे तो उस समय आपको एहसास होगा कि बिना सुने व बिना देखे भी वह किस प्रकार इस दुनिया को देखती हैं। और इस दुनिया को एक देखने वाले इंसान से भी अधिक खूबसूरती से देखती है, महसूस करती है।

1. नीचे दिए गए पशु–पक्षियों के चित्रों में रंग भरिए और उनके बारे में उपयुक्त विशेषण चुनकर लिखिए :

तोता 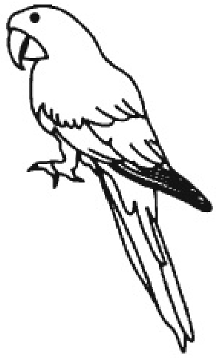 ....

मैना 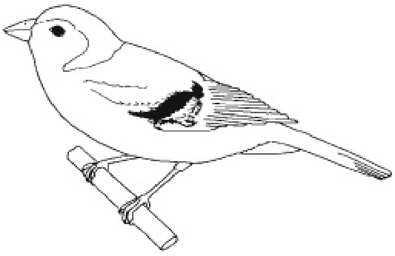 ....

मोर 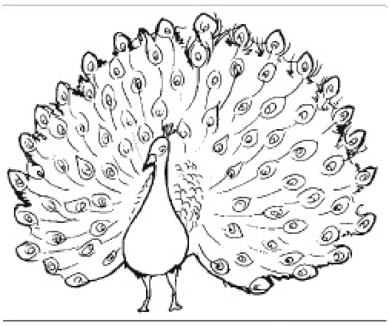 ....

कबूतर 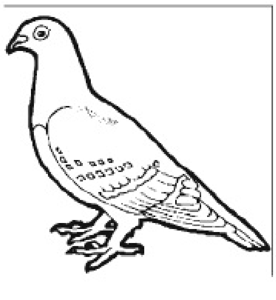 ....

गौरैया 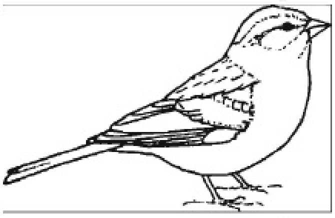 ....

कौवा 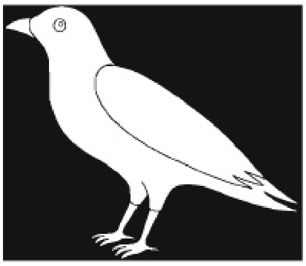 ....

गाय 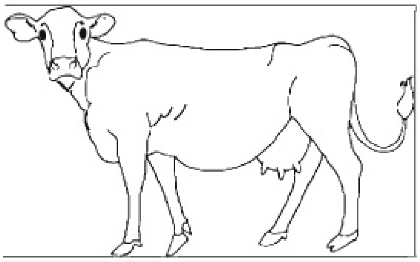 ....

2. जो बच्चे देख नहीं पाते, वे कैसे पढ़ते–लिखते, उनकी किताबें क्या आपकी किताबों जैसी ही हैं? उनकी किताबों और लिपि के बारे में लिखें।

3. कुछ लोग चाहते हैं कि जो बच्चे देख नहीं सकते उनके लिए अलग विद्यालय हो। आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

4. आपके विद्यालय में कुछ बच्चे ऐसे होंगे, जिन्हें चलने, देखने, बोलने, सुनने में समस्या है। इन्हें विद्यालय में किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा ?

5. इनकी समस्याओं के समाधान के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखो।

दिनांक :

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

विषय :

6. पाठ में खोजो ....

क) इस दौरान मुझे .... के जादू का कुछ अहसास होता है।

ख) वह .... उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

ग) हाल ही में .... एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटीं।

घ) .... के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ।

ङ.) बदलते हुए .... का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

वर्ग-पहेली

नीचे लिखे शब्दों के समानार्थी शब्द वर्ग पहेली में से ढूँढ़ों और खाली जगह में लिखो।

अं	ग	ज	ग	त
श	इ	न	सा	न
सु	आ	का	श	प
म	पा	ता	ल	शु
न	त	ध	र	ती

आसमान ....

संसार ....

शरीर ....

ज़मीन ....

मनुष्य ....

फूल ....

पाठ 8

संसार पुस्तक है

जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण उन्हें प्राय: जेल जाना पड़ता था। जिसके कारण अपनी एकमात्र पुत्री इंदिरा को अपने साथ नहीं रख पाते थे। (जेल में भी उन्हें अपनी बेटी की पढ़ाई-लिखाई की चिंता रहती थी। अत: उन्होंने पत्रों के माध्यम से अपनी बेटी को पढ़ाने का प्रयास किया।) इन पत्रों में उन्होंने इंदिरा को बताया है कि पृथ्वी की शुरुआत कैसे हुई और मनुष्य ने अपने आप को कैसे धीरे-धीरे समझा-पहचाना। ये पत्र बच्चों में अपने आस-पास की दुनिया के बारे में सोचने-समझने और जानने की उत्सुकता पैदा करते हैं। यह अनूदित रचना है। हिंदी जब अनुवाद की दुनिया में पाँव पसारती है तो कैसी दिखती है, इसका मज़ा आप इस रचना से लेंगे।

1. आपके अनुसार 'संसार' का क्या मतलब होता है? लेखक ने 'संसार को पुस्तक' क्यों कहा है?

____

____

____

____

2. पाठ से खोजो -

क) .... हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है।

ख) मुझे .... है कि इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ।

ग) कोई जबान, उर्दू, हिंदी या ...., सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने .... हैं।

घ) जब तुम कोई छोटा-सा गोल .... रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें .... नहीं बतलाता?

ड.) वहाँ से एक .... नाले ने ढकेलकर उसे एक छोटे-से .... में पहुँचा दिया।

शब्द – सीढ़ी

चित्रों की सहायता से शब्द सीढ़ी पूरी करो।

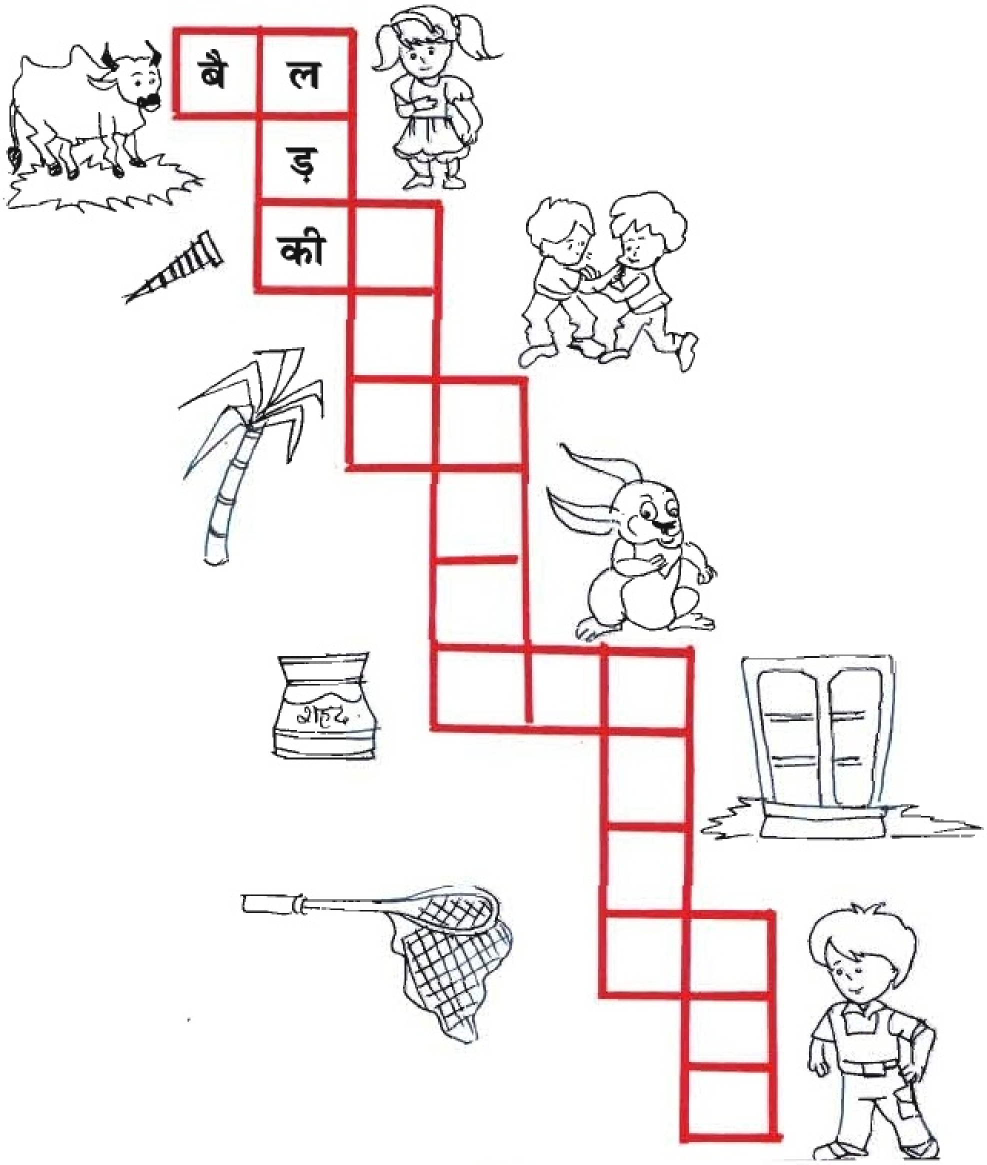

दिए गए शब्दों के विलोम शब्द वर्ग पहेली में से ढूँढ़कर लिखिए -

ना	आ	दू	अ
का	य	र	ने
पु	ण्य	रं	क
ह	ल्का	मि	त्र

शत्रु - ....

राजा - ....

पाप - ....

एक - ....

वीर - ....

भारी - ....

पास - ....

व्यय - ....

चित्र देखकर क्रिया शब्द लिखिए -

पाठ 9

मैं सबसे छोटी होऊँ

इस कविता में एक छोटी बच्ची हमेशा सबसे छोटी बच्ची ही रहना चाहती है। वह हमेशा अपनी माँ की गोदी में ही सोना चाहती है। वह सदा अपनी माँ का आँचल पकड़-पकड़कर ही चलना चाहती है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि अगर वह बड़ी हो जायेगी तब उसकी माँ उसका उतना ध्यान नहीं रखेगी। क्योंकि उसे आशंका है कि बड़े होते ही, उसकी माँ की ममता में कमी आ जायेगी। माँ से उसका पहले जैसा साथ नहीं रहेगा। अत: इन आशंकाओं के कारण बच्ची हमेशा सबसे छोटी ही रहना चाहती है।

1. कविता पढ़कर आपके मस्तिष्क में क्या-क्या दृश्य उभर रहे हैं ? उनमें से किन्हीं दो के चित्र बनाएँ।

2. 'मैं छोटी होऊँ' कविता के भाव से मिलती–जुलती कोई कविता–गीत आपको याद आ रहा होगा, उसे लिखें।

3. जंगल से जुड़े शब्द पढ़ो। इसी प्रकार शहर से जुड़े शब्द लिखो।

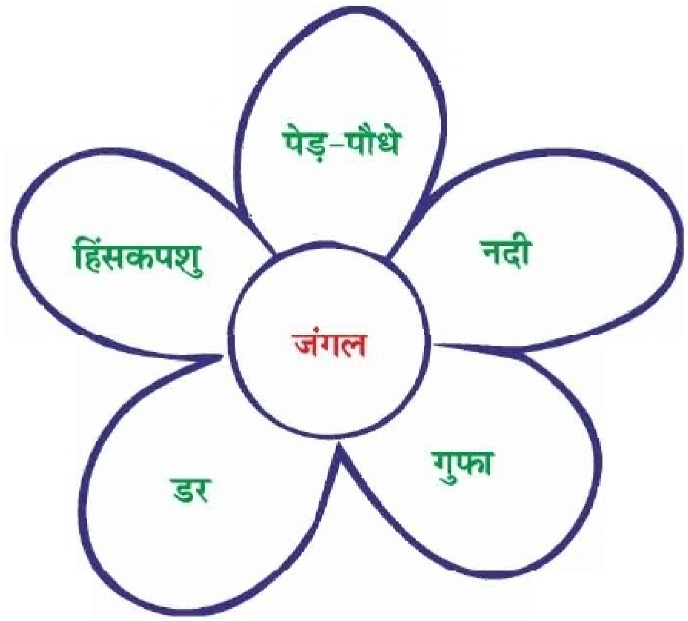

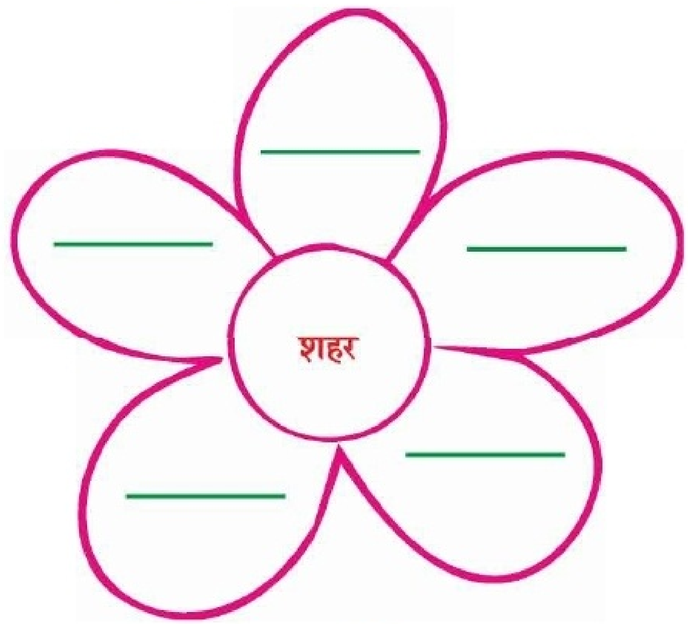

4. आपके प्रति आपके माता–पिता की कोई ऐसी बात जो आपको बिल्कुल ही पसंद नहीं आती बताएँ।

5. ऐसा क्या है जो आपके माता–पिता आपके लिए करना चाहते हैं लेकिन नहीं कर पाते ? वे ऐसा क्यों नहीं कर पाते होंगे ?

6. अपने माता–पिता की दिनचर्या के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, लिखें।

पाठ 10

नौकर

परिचय

दोस्तो, आप ने महात्मा गांधी का नाम अवश्य सुना होगा। उनकी तस्वीर भारत के हर नोट पर तुम देख सकते हो। महात्मा गांधी का पूरा नाम था मोहनदास करमचंद गांधी। उन्हें महात्मा का यह नाम ऐसे ही नहीं मिल गया था। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उनके स्वभाव और देश की सेवा को देखते हुए उन्हें 'महात्मा' यानी महान आत्मा का यह नाम दिया था। टैगोर वही हैं, जिन्होंने भारत का राष्ट्रगान जन-गण-मन लिखा था।

महात्मा गांधी सिर्फ नाम से ही नहीं, काम से भी महात्मा थे। क्या तुम उनके बड़े-बड़े कामों के बारे में बता सकते हो ? उनके जीवन के बड़े-बड़े कार्यों के अतिरिक्त उनका जीवन ऐसी बहुत सी छोटी-छोटी घटनाओं से भरा पड़ा है जो घटनाएँ सुनने-पढ़ने में तो छोटी लगती हैं लेकिन उनमें गहरे अर्थ छिपे हैं. 'नौकर' पाठ में तुम गांधी जी के जीवन की इन्हीं छोटी-छोटी घटनाओं के बारे में पढोगे।

यह पाठ एक बहुत ही रोचक पुस्तक में से लिया गया है जिसका नाम है 'बहुरूप गाँधी'। जैसा कि नाम से पता चल रहा है, बहुरूप गांधी में गांधी जी के जीवन और व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलुओं को बहुत रोचक ढंग से दर्शाया गया है। तुम्हारे स्कूल के पुस्तकालय में यह पुस्तक अवश्य होगी। इसे प्राप्त करके पढ़ना और अपने दोस्तों को भी पढने के लिए कहना।

इस किताब की लेखिका हैं अनु बंद्योपाध्याय। अनु बंद्योपाध्याय का जन्म 1917 में हुआ था यानी भारत की आजादी से बहुत पहले। उनकी मृत्यु सं 2006 में हुई। वे स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक कामों में भी गांधी जी की अभिन्न सहयोगी रही थीं। उन्होंने 'कलेक्टेड वर्क्स ओफ महात्मा गांधी' के संपादन के अलावा कस्तूरबा ट्रस्ट के साथ भी काम किया। 'बहुरूप गांधी' में लेखिका ने गांधी जी की दिनचर्या के उन कार्यों को रोचकता से लिखा है जिन्हें गांधी खुशी से करते थे। गांधी जी केवल राष्ट्रपिता और स्वाधीनता के निर्माता ही नहीं थे, उनके जीवन के हर प्रसंग से कुछ न कुछ सीखा जा सकता है।

1. नीचे दी गई तालिका में लिखो कि तुम्हारे घर में कौन, क्या काम करता है।

नाम	खाना बनाना	आय करना	पढ़ना	सफाई करना	खेलना	बरतन माँजना	पानी भरना	सब्जी खरीदना	टीवी देखना
पापा									
माँ									
भाई									
बहन									
आप									

2. आप अपना और अपने घर का कौन–कौन सा काम स्वयं करते हैं?

....

....

....

....

3. किन–किन स्थितियों में लोग अपने काम दूसरों से करवाते हैं?

....

....

....

....

4. सुबह से लेकर रात्रि तक आपकी दिनचर्या को पूरा करने में किन–किन श्रमजीवियों का योगदान रहता है, उनके बारे में लिखें।

....

....

....

....

5. श्रमजीवियों के प्रति आप अपना सम्मान किस प्रकार प्रकट करते हैं ?

....

....

....

....

6. चित्र का नाम लिखकर कहानी पूरी किजिए –

एक .... के नीचे 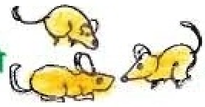 ....

की सभा बुलाई गई। 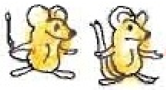 .... बड़े परेशान थे।

.... के डर से वे .... से बाहर भी

निकल नहीं पाते थे। एक .... ने कहा कि

.... के .... में 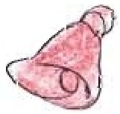

.... बाँध दो। पर .... बाँधेगा कौन?

एक .... बोला – मैं बाधूँगा। ....

गया 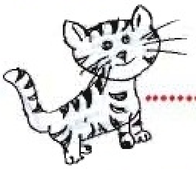 .... के पास और बोला – ''मौसी लो यह

.... पहन लो। बड़ी अच्छी लगेगी।

सही शब्द चुनकर जोड़े बताओ।

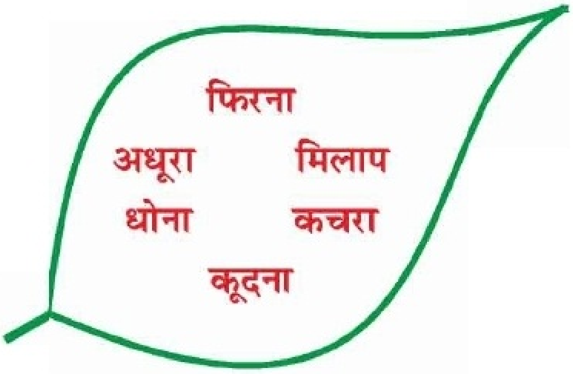

- आधा – ....
- कूड़ा – ....
- चलना – ....
- उछलना – ....
- नहाना – ....

पाठ 11

सांस सांस के बांस

परिचय

दोस्तो, आपको अपने चारों ओर कई तरह की वस्तुएँ दिखाई देंगी। कोई लकड़ी से बनी है, कोई लोहे से बनी है, कोई कपड़े से बनी है और कोई प्लास्टिक से बनी है। इसी तरह आपने बांस से बनी हुई कोई ना कोई वस्तु या तो देखी होगी या उसका इस्तेमाल किया होगा जैसे कोई टोकरी, मूढ़ा या कुर्सी। आज हम इसी अनोखे बांस के बारे में एक लेख पढ़ने वाले हैं। बाँस एक अनोखी वस्तु है। बाँस एक तरह की सख्त घास है। प्राकृतिक रुप से इतना कठोर होने के बावजूद, इसे मोड़ा जा सकता है, काटा जा सकता है, रंग-बिरंगा बनाया जा सकता है। भारत में बाँस का उपयोग कई तरीकों से किया जाता है। बाँस से विभिन्न वस्तुएँ तो बनाई जाती हैं, बाँस का खाने-पीने की कई चीज़ों में भी इस्तेमाल किया जाता है। दशहरे पर रावण के जो पुतले जलाए जाते हैं, उन्हें बनाने में भी बाँस का इस्तेमाल होता है। बाँस से बनी सीढ़ी तो लगभग हर घर में मिल ही जाती है।

इस पाठ में हम पढ़ेंगे कि भारत में बाँस का इस्तेमाल कितने अनोखे तरीकों से किया जाता है। साथ ही हम यह भी पढ़ेंगे कि बाँस की कई तरह की चीजें बनाने के लिए कितने जतन करने पड़ते हैं। हमारे देश में कई इलाके ऐसे हैं जहां की जिंदगी बांस के बिना नामुमकिन सी लगती है यानी उनकी जिंदगी के हर पहलू में बांस का कोई ना कोई उपयोग अवश्य होता है। ये इलाके हमारे देश भारत के उत्तरी-पूर्वी भाग में हैं। यहाँ के लोग प्रकृति की गोद में रहते हैं, इसलिए प्रकृति का पूरा सम्मान करते हैं। ऐसा लगता है कि उन लोगों की साँस में ही बांस की खुशबू रच-बस गई है। इसीलिए इस पाठ का नाम है - सांस सांस में बांस।

1. बाँस से बनी चीज़ों के नाम जाली में से खोजकर लिखो :

टो	पी	सी	ढ़ी
क	जा	ल	च
री	झा	ड़ू	टा
चा	र	पा	ई

__________ __________ __________

__________ __________ __________

__________ __________ __________

2. चित्रों को पहचानिए और लिखिए कि ये स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग –

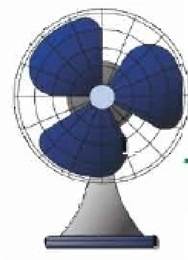 ____________

____

____

____

____

____

3. नीचे लिखे शब्दों को एकवचन और बहुवचन के लिफ़ाफ़ों में डालो।

कुरसियाँ बच्चे आँखें हाथ कन्या दवाई स्त्रियाँ छाते
कमरा मशीन लड़के पंखा कन्याएँ टोकरी

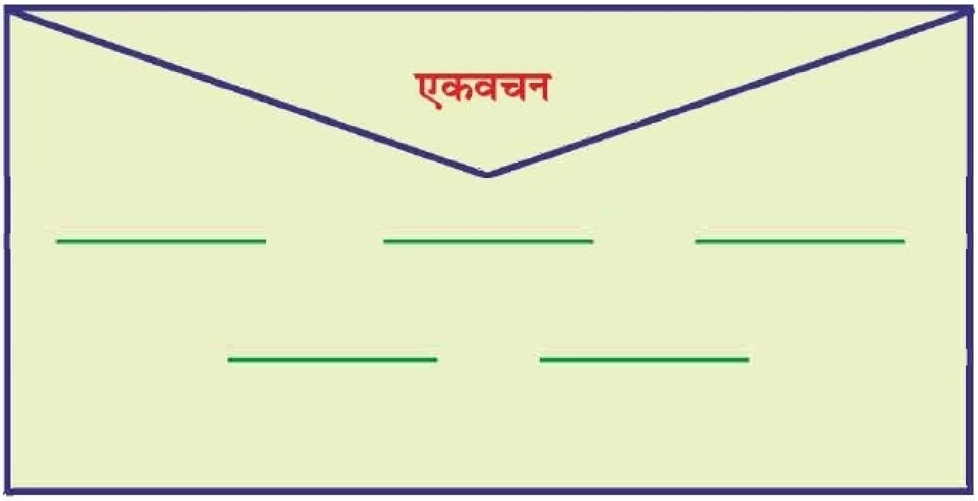

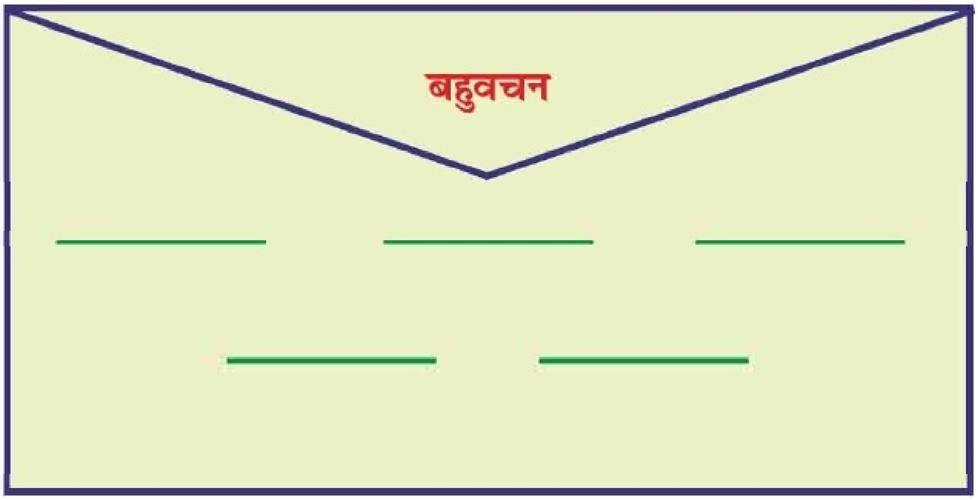

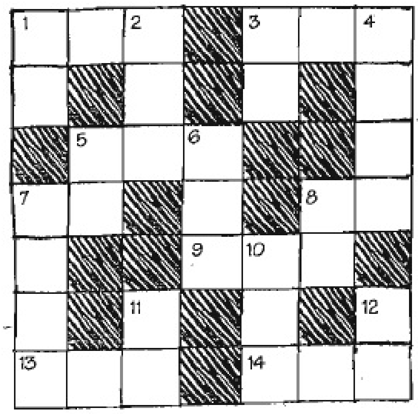

बाएँ से दाएँ →

1.
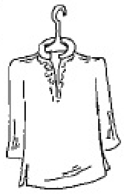

3.

5.
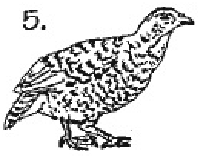

7. बरसात में है किसी बात का निचोड़ (2)

8.
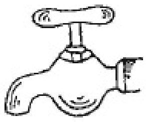

9.
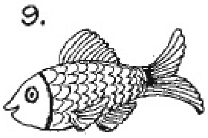

13.
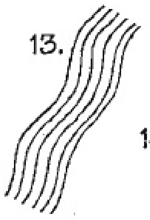

14. गया के पेट में वैद्य का सिर, गायक (3)

ऊपर से नीचे ↓

1.
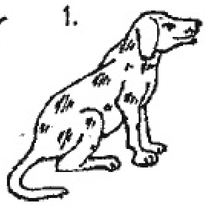

2. काटता कतरन में है शक्ति (3)

3.
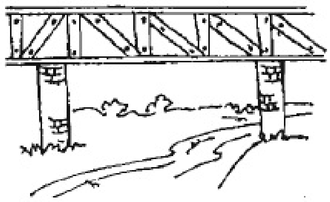

4.
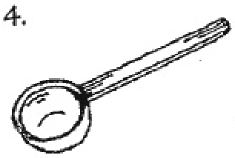

5.
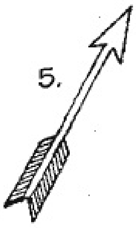

6. भार कम में धन-दौलत (3)

7.
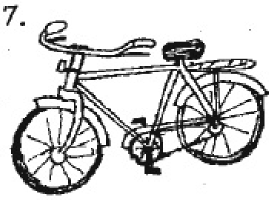

8.
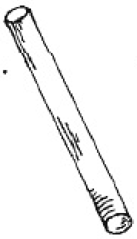

10.

11.
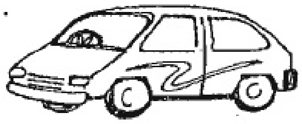

12. कामयाब में है शरीर (2)

पाठ 12

मत बाँटो इंसान को

मंदिर–मस्जिद–गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
(धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को।।)

अभी राह तो शुरू हुई है–
मंज़िल बैठी दूर है।
उजियारा महलों में बंदी–
हर दीपक मजबूर है।।

मिला न सूरज का संदेसा–
हर घाटी–मैदान को।
(धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को)।।

अब भी हरी भरी धरती है–
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सुना–
जलता रेगिस्तान है।।

अभी प्यार का जल देना है–
हर प्यासी चट्टान को।
(धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को)।।

साथ उठें सब तो पहरा हो–
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगर का हक हो–
खिलती हुई बहार पर।।

रौंद न पाएगा फिर कोई–
मौसम की मुस्कान को।
(धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को)।।

❑ विनय महाजन

Document Outline

- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_01
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_02
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_03
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_04
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_05
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_06
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_07
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_08
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_09
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_10
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_11
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_12
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_13
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_14
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_15
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_16
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_17
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_18
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_19
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_20
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_21
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_22
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_23
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_24
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_25
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_26
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_27
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_28
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_29
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_30
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_31
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_32
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_33
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_34
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_35
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_36
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_37
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_38
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_39
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_40
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_41
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_42
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_43
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_44
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_45
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_46
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_47
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_48
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_49
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_50
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_51
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_52
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_53
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_54
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_55
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_56
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_57
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_58
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_59
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_60
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_61
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_62
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_63
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_64

- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_65
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_66
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_67
- 8_pragati_II_Hindi_Class_6.pdf_page_68